द्वितीय वर्ष

अंक – 8

चर्चा पत्र - जनवरी 2017

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

द्वितीय अकादमिक निरीक्षण विशेष

राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गाँधी शिक्षा मिशन,
रायपुर छ.ग.

आमुख

देखते ही देखते वर्ष 2016 जा रहा है और हम नए वर्ष 2017 का स्वागत करने को तैयार बैठे हैं | वर्ष 2016 स्कूली शिक्षा के लिए यादगार वर्ष रहा | आपके सहयोग से हम सबने मिलकर विभिन्न क्षेत्रों में कुछ नया और प्रभावी करने की सफल कोशिश की | राज्य के सुदूर अंचलों के तीन बच्चों ने कुल अट्ठाईस सफल बच्चों के बीच राष्ट्रपति महोदय से इग्नाईट अवार्ड हासिल किया | राज्य में अब संकुल व्यवस्था को धीरे-धीरे सुदृढ़ करने की दिशा में सोच-समझकर कार्य किया जा रहा है | आंगनबाडी से लेकर तकनीकी एवं उच्च शिक्षा तक के लिए हमने सस्टेनेबल डेव्हलपमेंट गोल के लिए दस्तावेज एवं विजन 2030 भी तैयार कर लिया है | आशा है कि इन सब कोशिशों से बच्चों की उपलब्धि में सुधार आएगा और सीखने का वातावरण बन सकेगा |

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत हमने सभी प्राथमिक शालाओं में संपर्क फाउंडेशन की मदद से गणित किट प्रदान अक्रते हुए शिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया | इस प्रशिक्षण के बाद हमने जिलों में किट के उपयोग के आधार पर रैंकिंग करते हुए नियमित उपयोग हेतु प्रेरित किया | इस वर्ष अंग्रेजी किट का उपयोग तीन हजार प्राथमिक शालाओं में किया जा रहा है | अगले वर्ष इस किट को भी पूरे राज्य की प्राथमिक शालाओं में वितरित कर उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा | पर इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि अंग्रेजी का प्रशिक्षण प्राथमिक शाला के वो शिक्षक न लें जिन्होंने गणित किट का प्रशिक्षण लिया है | ऐसा करके हम यह कोशिश करना चाहते हैं कि कक्षा पहली दूसरी में भी अलग-अलग शिक्षक अलग-अलग विषय सिखाने की जिम्मेदारी लें | इसमें आपके विचार एवं सुझाव से हमें अवगत करावें ताकि इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं से अवगत हुआ जा सके |

इस वर्ष अमेरिका की शालाओं की तर्ज पर यहाँ भी स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षकों को प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर एक दूसरे से सीखने के अवसर तैयार करने की दिशा में कार्य किया गया | शिक्षकों ने बढ-चढ़ कर अपने अपने पसंदीदा विषयों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाई | राज्य स्तर से भी सीधे इन कम्युनिटी के साथ जुड़कर इनके कार्यों का अवलोकन, प्रोत्साहन एवं समर्थन करने की व्यवस्था की गयी | राज्य में पहली बार डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु पीएलसी की सेवाएं ली गयी और विभिन्न विकासखंडों से उनके द्वारा बेहतर गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण के आयोजन की सूचनाएं प्राप्त हो रही है | परिषद व्दारा आयोजित फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली से परिचय एवं मैनेजमेंट गुरु रघुरामन के व्याख्यान का लाभ लेने इस बार विशेष रूप से प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को आमंत्रित किया गया था और उनकी उपस्थिति भी बेहतर थी |

इस अभियान के तहत माताओं ने भी इस वर्ष शालाओं में आने की शुरूआत की | उन्हें घर पर बच्चों की पढाई की जानकारी लेने, बच्चों को पढने के लिए बेहतर माहौल बनाने, उनके पढाई के लिए आवश्यक व्यवस्था करने एवं समय समय पर स्कूल जाकर अपने शिक्षकों ने बच्चों के पढाई की जानकारी लेने की दिशा में कार्य किया जा रहा है | शिक्षकों से चर्चा पत्र के बारे में भी बेहतर प्रतिक्रियाएं मिल रही है | संकुल की बैठकों में अकादमिक चर्चाएँ होने लगी है | छत्तीसगढ़ के शिक्षक देश-विदेश में शिक्षा के बारे में जानकारियों के साथ साथ विभिन्न सम-सामयिक मुद्दों पर अपने विचार रखने लगें हैं | चर्चा पत्रों के माध्यम से शिक्षकों तक सीधे अकादमिक मुद्दों पर चर्चाएँ संभव हो पा रही है |

इन सब बातों में सबसे बड़ी बात यह है कि उपरोक्त सारे कार्य बिना किसी लागत के हो रहे हैं | चर्चा पत्र से लेकर माताओं के उन्मुखीकरण तक के सभी कार्य बिना किसी राशि के शिक्षकों के अन्दर के जोश और गुणवत्ता सुधार के लिए कुछ कर गुजरने की इच्छा, जोश की वजह से ही संभव हो पा रहे हैं | इस जोश के बरकरार रहने एवं कक्षाओं में नवाचार के लिए स्वतंत्रता या ऑटोनोमी की वजह से निश्चित रूप से हमारी कक्षाओं की कहानियां बदलेंगी | इसमें कोई शंका नहीं हैं |

आप सभी को परिवार सहित नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !

एजेंडा # 1: नए वर्ष में अपने संकुल में शिक्षा के भागीदारों व्दारा संकल्प–

नए वर्ष की शुरुआत में शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु शिक्षा से जुड़े विभिन्न भागीदारों व्दारा कुछ न कुछ संकल्प लेने का यह एक सुनहरा अवसर है | शिक्षक, पालक, संकुल समन्वयक, शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य सभी अपने अपने स्तर पर कुछ न कुछ संकल्प ले सकते हैं | आपसे अनुरोध है कि अपने संकुल की बैठक में शिक्षकों से चर्चा कर अपने संकुल के सभी शिक्षकों के लिए एक संकल्प पत्र तैयार कर सभी की सहमति से कुछ ऐसे संकल्प लेना तय करें जिसमे कोई समझौता नहीं हो सके | आपके सहयोग के लिए शिक्षकों के लिए संकल्प लेने के कुछ क्षेत्रों से परिचित किया जा रहा है –

1. मैं प्रतिदिन अपनी कक्षा में बच्चों को सीखने के स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित कर उसे निर्धारित समय पर पूरा करूंगा |
2. मैं अप्पने विद्यार्थियों के साथ काम करते समय उनके प्रति सदैव सकारात्मक सोच रखूंगा |
3. मैं अपनी प्रत्येक कक्षा को रोचक बनाने का प्रयास करूंगा एवं बेहतर कार्यों की तारीफ करना नहीं भूलूंगी |
4. मैं अपने आपको बेहतर प्रदर्शन करने योग्य बनाने सदैव एक दूसरे से सीखने हेतु पीएलसी के साथ–साथ एक अच्छा मेंटर बनाऊंगा, स्व–अध्ययन करते रहने के साथ–साथ चिंतनशील बनूंगी |
5. मैं अपने काम में पूरी रूचि लूंगा, बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखूंगा, out of box सोचूंगा और पालकों से भी नियमित रूप से मिलूंगा |
6. मुझे अपने विषय में मास्टरी के साथ साथ किसी विषय को बच्चों को सिखाने की विभिन्न विधियों का ज्ञान होगा |

शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों क लिए कुछ संकल्प इस प्रकार हो सकते हैं–

1. स्कूल में आयोजित बैठकों में नियमित रूप से उपस्थित होऊंगा |
2. बच्चों एवं शिक्षकों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने में आवश्यक सहयोग करूंगा |
3. स्कूल में बच्चों की उपलब्धि में सुधार पर फोकस करूंगा |
4. शिक्षकों को उनके कार्यों को संपन्न करने में आवश्यक सहयोग करूंगा |
5. बैठक में अकादमिक मुद्दों पर विशेष ध्यान दूंगा |
6. आंगनबाडी कार्यकर्ता, मितानिन एवं स्व–सहायता समूहों को शाला से जोड़कर सहयोग लूंगा |

इसी प्रकार पालकों, शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों के लिए भी कुछ संकल्प तय करते हुए उनसे साझा करते हुए उनकी राय के आधार पर उनसे भी कुछ संकल्प अवश्य इस अवसर पर दिलवाएं | यदि संभव हो तो सभी को अपने अपने संकल्प अपने मोबाइल में वीडियो रिकार्ड कर रखने एवं वर्ष में समय समय पर देखकर याद करने का अवसर देवें | कुछ बेहतर संकल्प हमारे साथ भी व्हाटसएप्प समूह के माध्यम से शेयर करें | हमें भी सुनाएं |

एजेंडा # 2: द्वितीय अकादमिक मानिटरिंग की तैयारी–

माह जनवरी में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत चयनित फोकस शालाओं की द्वितीय मानिटरिंग किया जाना है | राज्य स्तर से शिक्षकों के सतत क्षमता विकास पर ध्यान दिया गया है | चर्चा पत्रों एवं फोकस शालाओं के शिक्षकों का पीएलसी सदस्यों के माध्यम से सीधे प्रशिक्षण का आयोजन की व्यवस्था के लिए जिलों को आवश्यक सहयोग भी एस.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से कर लिया गया है | संवेदनशील जिलों में अपने स्तर भी अनेक प्रयास किए जा रहे हैं | आप द्वितीय अकादमिक निरीक्षण के दौरान निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखेंगे–

- बच्चे शाला में नियमित रूप से आएं, इसका ध्यान रखेंगे |
- प्रथम निरीक्षण में अपनी शाला में आए जन–प्रतिनिधि/ अधिकारियों से संपर्क कर उन्हें अपनी शाला में आने एवं आने की तिथि आदि की जानकारी लेंगे |
- बच्चों के साथ चयनित दस दक्षताओं पर पर्याप्त अभ्यास करवाएंगे ताकि उन्हें किसी प्रकार का संकोच न हो |
- इस अभियान के तहत शालाओं ने उपलब्ध होने वाले नियमित संसाधनों जैसे प्रिंट रिच वातावरण, वाल मैगजीन, लर्निंग कार्नर्स जैसे चीजें शाला में उपयोग करते दिखाई देनी चाहिए |
- चर्चा पत्र के विभिन्न मुद्दों पर शिक्षकों को पूरी–पूरी जानकारी होनी चाहिए |

एजेंडा # 3: सामुदायिक सहभागिता के दो उदाहरण–

हमने शिक्षक प्रशिक्षण में आयोजन के आगे की बात उठाई थी | पिछले कुछ माहों पर ध्यान दें तो हम बहुत सारे आयोजन कर रहे हैं, दिवस मना रहे हैं | पर आप इस बात से सहमत होंगे कि केवल आयोजन मना लेने से कुछ नहीं होगा | हमें आयोजनों से आगे बढ़ना होगा | चीजों को धरातल में होते हुए एवं उसका लाभ बच्चों को मिलना सुनिश्चित करना होगा | इसके दो छोटे–छोटे उदाहरण इस अंक में दिए जा रहे हैं |

केस स्टडी एक– हमने सभी शालाओं में माताओं को शाला से जोड़ने के लिए माताओं के उन्मुखीकरण का सुझाव दिया था | प्रायः सभी शालाओं में माताओं का उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है | इन आयोजनों में बड़ी संख्या में माताओं ने अपनी सहभागिता दी है जिसके प्रमाण आपके द्वारा भेजे गए फोटोग्राफ्स भी हैं | पर इन आयोजनों का उद्देश्य केवल माताओं को एक बार शाला में बुलाकर उनका उन्मुखीकरण मात्र नहीं है | हमें इस प्रकार के आयोजन से आगे भी जाना होगा | इस बार कांकेर जिले के नरहरपुर विकासखंड के ग्राम पंडरीपानी में महिलाओं के सम्मेलन में उपस्थित होने का अवसर मिला | इस सम्मेलन के आयोजन का उद्देश्य था – "अनाज दान, शिक्षा दान"| माताओं को यह अहसास हुआ कि बारहवीं तक पढ़ने के लिए उन्हें अभी से तैयारी एवं संसाधन एकत्र करने होंगे | बच्चों को विभिन्न विषयों पर ट्यूशन के लिए शिक्षक की व्यवस्था भी करनी होगी | इन सबके लिए महिलाओं ने गाँव में माहौल बनाते हुए कलश यात्रा के साथ–साथ एक वाहन में हर घर से

अनाज दान प्राप्त किया | इस यात्रा से प्राप्त राशि से बच्चों को आगे की शिक्षा के लिए समर्थन देने हेतु ट्यूशन आदि की व्यवस्था कर हर बच्चे को बारहवीं तक पास कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया |

केस स्टडी दो– हम शालाओं में स्वच्छता के संदेश देने समय समय पर विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम एवं स्वच्छता का संदेश देने बच्चों की रैली आदि का आयोजन करते हैं | स्वच्छता का संदेश इन रैलियों के साथ ही समाप्त हो जाता है और रैली में उपयोग किए प्लास्टिक एवं अन्य सामग्री इधर–उधर बिखरी पड़ी मिलती है | कवर्धा जिले के चीमागोंदी संकुल के ग्राम भागुतोला, मैनपुरी और खलका की शालाओं में ग्रामवासियों ने इन आयोजनों से आगे बढ़कर कुछ नया करने का प्रयास किया |

शाला प्रबन्धन समिति ने शाला में हाथ धुलाई में महत्त्व को ध्यान में रखकर शाला में पर्याप्त मात्रा में साबुन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से गाँव में रैली निकालने का निर्णय लिया गया | रैली निकालनें के पूर्व गाँव ने इस बाबत मुनादी भी कराई गयी | इसके तहत एक जागरूकता रैली निकालकर घरों से साबुन एकत्रित किया गया और समुदाय को नियमित रूप से साबुन से हाथ धोने के लिए आग्रह करते हुए उसकी आवश्यकता की जानकारी भी दी गयी | इस प्रयास से प्रत्येक शाला में लगभग सौ से अधिक साबुन एकत्र किया गया जिसका उपयोग बाल संसद के माध्यम से नियमित किया जाना सुनिश्चित किया गया |

इन दोनों उदाहरणों पर संकुल में शिक्षकों के साथ चर्चा करें | आपके संकुल में भी समय समय पर किए जा रहे विभिन्न आयोजनों के आगे कुछ ठोस गतिविधियों को करने की दिशा में चर्चा करें ताकि बच्चों को कुछ फायदा मिल सके | आप भी इस प्रकार आयोजनों के आगे कर रहे कार्यों को हमारे साथ शेयर करें ताकि उन्हें चर्चा पत्र में स्थान मिल सके और अन्य शिक्षक भी अपने यहाँ ऐसा कुछ कर सके |

एजेंडा # 4: दो कविताओं से परिचय–

इन दोनों कविताओं को शिक्षकों के साथ पढ़कर आत्मचिंतन मनन करें -

क्या करूँ

तुम्हें क्या पता पढ़ना सीखने के लिए,

मुझे कहाँ-कहाँ भटकना पड़ रहा है।

एक-एक शब्द को पढ़ने के लिए,

कितनी बार अटकना पड़ रहा है।

मुझे तो पढ़नी है बहुत सी कहानी,

पर वर्ण और मात्रा के ये मेल,

याद दिला रहे हैं मेरी नानी।

अब बिना समझ के इन दोनों का,

कड़वा घूँट मुझे गटकना पड़ रहा है।

तुम्हें क्या पता.....

क्या करूँ कोई रास्ता दिखाता भी नहीं,

पढ़ते कैसे हैं व्यवस्थित सिखाता भी नहीं।

किसी के कहने पर अब बारहखड़ी में ही,

अपना सिर मुझे पटकना पड़ रहा है।

तुम्हें क्या पता.....

पढ़ने के लिए क्या -क्या जरूरी है,

कोई यह नहीं बताता,यही तो मजबूरी है।

इसीलिए पढ़ने के इस मकड़जाल में,

अब तक मुझे लटकना पड़ रहा है।

तुम्हें क्या पता.....

द्रोण साहू, 9993902395

"You Start Dying Slowly"

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आप :
- करते नहीं कोई यात्रा,
- पढ़ते नहीं कोई किताब,
- सुनते नहीं जीवन की ध्वनियाँ,
- करते नहीं किसी की तारीफ़।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, जब आप :
- मार डालते हैं अपना स्वाभिमान,
- नहीं करने देते मदद अपनी और न ही करते हैं मदद दूसरों की।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आप :
- बन जाते हैं गुलाम अपनी आदतों के,
- चलते हैं रोज़ उन्हीं रोज़ वाले रास्तों पे,
- नहीं बदलते हैं अपना दैनिक नियम व्यवहार,
- नहीं पहनते हैं अलग-अलग रंग, या
- आप नहीं बात करते उनसे जो हैं अजनबी अनजान।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आप :
- नहीं महसूस करना चाहते आवेगों को और उनसे जुड़ी अशांत भावनाओं को, वे जिनसे नम होती हों आपकी आँखें और करती हों तेज़ आपकी धड़कनों को।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आप :
- नहीं बदल सकते हों अपनी ज़िन्दगी को, जब हों आप असंतुष्ट अपने काम और परिणाम से,
- अग़र आप अनिश्चित के लिए नहीं छोड़ सकते हों निश्चित को,
- अगर आप नहीं करते हों पीछा किसी स्वप्न का,
- अगर आप नहीं देते हों इजाज़त खुद को, अपने जीवन में कम से कम एक बार,

किसी समझदार सलाह से दूर भाग जाने की,
तब आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं...!!!

(कवि पाब्लो नेरुदा की एक सुन्दर कविता)

एजेंडा # 5: **School Education Quality Index (SEQI)–**

नीति आयोग व्दारा शाला में गुणवत्ता लाने हेतु राज्यों की रैकिंग हेतु एक इंडेक्स बनाया गया है जिसके आधार पर राज्यों को अपनी शालाओं में गुणवत्ता हेतु प्रयास करने होंगे | शालाओं में गुणवत्ता लाने हेतु आपके स्तर पर जो कार्य गंभीरता से करने होंगे, उनमे से कुछ इस प्रकार हैं–

1. कक्षा तीसरी, पांचवीं एवं आठवी के बच्चों की गणित एवं भाषा (हिन्दी/ अंग्रेजी) में उपलब्धि में सुधार हेतु लगातार प्रयास करते रहना चाहिए | इंडेक्स में एक हजार में से छः सौ अंक इस क्षेत्र के लिए निर्धारित हैं |
2. प्रत्येक कक्षा में उस कक्षा के आयुवर्ग से संबंधित आयु के बच्चों को ही दर्ज किया जाना चाहिए | अर्थात कक्षा एक में केवल छः आयु वर्ग के बच्चे, कक्षा छः में केवल ग्यारह आयु वर्ग के बच्चे ही होना चाहिए |
3. शाला से बाह्य बच्चों को तत्काल आयु–अनुरूप कक्षा में प्रवेश दिलाए जाने बाबत आवश्यक प्रयास किए जाने चाहिए एवं उन्हें उस कक्षा के मूलभूत दक्षताओं को हासिल करवाए जाने हेतु अतिरिक्त मेहनत की जानी चाहिए |
4. विभिन्न वर्गों (SC, ST, OBC, Girls) के बीच की उपलब्धि एवं नामांकन में असमानता को दूर करने हेतु सभी प्रयास करने होंगे |
5. ऐसी प्राथमिक शालाएं जिसमे 150 या उससे अधिक बच्चे हों, उच्च प्राथमिक स्तर पर 100 या उससे अधिक बच्चे हों तो ऐसी शालाओं में अनिवार्यतः प्रधान पाठक होने चाहिए | शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत इससे कम दर्ज संख्या वाली शालाओं में प्रधान पाठकों की आवश्यकता प्राथमिकता में नहीं है |

6. प्राथमिक शालाओं में कम से कम दो शिक्षक होना अनिवार्य होगा | शाला में दर्ज संख्या 150 या उससे कम होने पर PTR 30:1 और दर्ज संख्या 150 से अधिक होने पर PTR 40:1 के अनुसार शिक्षक उपलब्ध होने चाहिए | उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं भाषा में प्रत्येक में एक–एक शिक्षक होने चाहिए | इस स्तर पर PTR 35:1 या उससे कम होना चाहिए |
7. सेकंडरी एवं हायर सेकंडरी स्तर पर विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन, अंग्रेजी एवं भाषा में प्रत्येक में एक–एक शिक्षक होने चाहिए | इस स्तर पर PTR 30:1 या उससे कम होना चाहिए |
8. सभी शिक्षकों को राज्य में मानव संसाधन प्रबन्धन सिस्टम (Human Resource Management System-HRMS) से जुड़ना होगा | सभी शिक्षकों के पास आधार नंबर होना चाहिए |
9. सभी शिक्षकों का नियमित अंतराल से कार्य निष्पादन/ मूल्यांकन होना चाहिए |
10. सीसीई अथवा बच्चों की उपलब्धि परीक्षण के परिणामों के आधार पर शालाओं व्दारा शाला विकास अथवा सुधार योजना बनाकर उनके अनुरूप सुधार कार्य किया जाना चाहिए |

एजेंडा # 6: एक नवाचार–

सरगुजा जिले के लुंड्रा विकासखंड में डाकाई संकुल केंद्र में संकुल समन्वयक श्री हुसामुद्दीन अहमद (7089751864) व्दारा वहां के सभी प्राथमिक शालाओं में एक नवाचार किया गया है | इस हेतु प्रति शाला लगभग 23 रूपए मात्र का खर्च आता है (4 रू0 का धागा, 3 रू0 की सुई, और 15 रू0 का 2 दर्जन बटन) | इसके अंतर्गत शाला में किसी बच्चे का यूनिफार्म का बटन टूट गए हों या सिलाई उधड गयी हो तो बच्चों को छोटी–मोटी सिलाई से संबधित काम सिखाया जाता है | बच्चों को इससे सिलाई सीखने के साथ–साथ अपने कपड़ों को करीने से पहन कर आने की प्रेरणा भी मिलती है | इस नवाचार से स्कूल को निम्नलिखित लाभ मिल रहे हैं –

- बच्चे सिलाई एवं तुरपाई का काम सीख जा रहे हैं।
- अभिभावक भी खुश हो रहे हैं, साथ ही बच्चों के कपडे को व्यवस्थित तरीके से पहना कर स्कूल भेज रहे हैं।
- लड़कियों के साथ साथ लड़के भी सिलाई का कार्य सीख रहे हैं।
- बच्चों की उत्सुकता के कारण उपस्थिति प्रतिशत बढ़ा है।
- यूनिफार्म बेकार होकर फेंकने से बच रहा है।
- अत्यंत गरीब बच्चों को पुराने कपडे पहनने को मिल जा रहा है, जबकि वो u s e l e s s होनेवाले थे।

आपस में चर्चा करें कि ऐसे और कौन कौन से कार्य हैं जो बहुत ही कम लागत में बहुत व्यापक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं | आपके आसपास शिक्षक इनमे से अपनी शाला में क्या–क्या करना चाहेंगे ?

एजेंडा # 6: पिछले कुछ कार्यों का फीडबैक–

माह दिसंबर में हमने आपको गणित सप्ताह के आयोजन हेतु सुझाव दिया था | बहुत से क्षेत्रों से इस कार्यक्रम को सक्रियता के साथ आयोजित किया गया है और उसके रिपोर्ट एवं फोटोग्राफ्स भी भेजे हैं | आपके यहाँ भी इस दिशा में जो कार्य हुआ है, हमारे साथ शेयर करें |

पिछले अंक में हमने आपको राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत विज्ञान से संबंधित सामग्री पठन काड्र्स या Do it yourself cards के रूप में जिलों में मुद्रण के लिए तैयार करने हेतु कार्य के कुछ क्षेत्र उपलब्ध कराए थे | आपको प्रशिक्षण या बैठक के दौरान इन मुद्दों पर चर्चा कर स्थानीय रूप से कुछ सामग्री विकसित कर अपने जिला एवं राज्य परियोजना कार्यालय के साथ शेयर करनी थी | कुछ क्षेत्र इस प्रकार हैं –

- हमारे आसपास सामाजिक परंपराओं एवं रीति-रिवाजों में निहित विज्ञान को खोजकर सामने लाना (सीधे बैठकर पढ़ने क्यों कहा जाता है ? घरों में आँगन में गोबर क्यों लीपा जाता है ? आँगन में तुलसी का क्या महत्व है ? उपवास क्यों रखते हैं ?...)

- हमारे घर या आसपास आसानी से उपलब्ध होने वाले वस्तुओं से कुछ आसान प्रयोग करने का विवरण दर्शाते कार्ड्स
- कबाड़ से जुगाड़ के माध्यम से विज्ञान को रोचक बनाने के कुछ तरीके
- प्राचीन युग से अपनाए जा रहे कुछ नुस्खे (जैसे आदिवासी क्षेत्रों में मौसम की भविष्यवाणी जानने के तरीके.....)
- स्वास्थ्य की देखभाल के लिए कुछ घरेलू नुस्खे एवं ध्यान देने योग्य कुछ बातें
- अब तक इग्नाईट अवार्ड में सुझाए गए कुछ नवाचारी उपायों का विवरण
- पाठ्य-पुस्तकों में उपलब्ध विभिन्न प्रकरणों को आसानी से समझाए जाने हेतु कुछ गतिविधियाँ
- गणित एवं विज्ञान शिक्षण हेतु विभिन्न सहायक सामग्री बनाने के तरीके
- मोबाइल के माध्यम से खरीददारी हेतु उपलब्ध विभिन्न तरीके एवं प्रक्रिया

इसके अलावा और भी अन्य मुद्दों पर सभी जिलों को प्रिंट करने हेतु काड्र्स तैयार कर आपस में शेयर किया जाना है | जिलों में इस हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना है | इच्छुक प्रतिभागी अपने जिले में संपर्क करें एवं तैयार सामग्री राज्य परियोजना कार्यालय से या ग्रुप में व्हात्सेप्प (9425507257) के माध्यम से शेयर करें | इस माह के अंत तक जिलों में इन पर आवश्यक सामग्री बन जानी चाहिए |

एजेंडा # 7: इस माह के लिए कार्य–

आपके संकुल या आसपास विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ उपलब्ध होंगे | कई बार हमें कुछ कार्यों के लिए विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है और वो हमारे आसपास होने के बावजूद हम उसे ढूंढ नहीं पाते | बेहतर होगा कि हम शिक्षा से जुड़े विभिन्न कार्यों के लिए हमारे संकुल या आसपास उपलब्ध विशेषज्ञों की सूची तैयार कर एक रिसोर्स मैपिंग कर लेवें और समय समय पर इनकी विशेषज्ञता का उपयोग कर सकें | शिक्षा से जुड़े विभिन्न क्षेत्र कुछ इस प्रकार हो सकते हैं– अध्यापन, विषय विशेषज्ञता, शिक्षक प्रशिक्षण, मोटिवेशन व्याख्यान देने वाले, गीत–संगीत का उपयोग कर पढ़ाने वाले, अभिनय एवं अन्य लोक कलाओं के उपयोग में पारंगत व्यक्ति, चित्रकला, सहायक सामग्री निर्माण, वादन, फिल्म बनाने वाले, पुस्तक लिखने वाले, डिजाइन बनाने वाले, कैरियर काउंसिलिंग में सहयोग करने वाले, बच्चों को ज्ञानप्रद एवं नैतिक शिक्षा देने वाले आदि आदि |

आपस में चर्चा कर अपने संकुल के लिए ऐसे लोगों हो विभाग से हों या बाहर से हों, की सूची बनाकर उनका विवरण एवं संपर्क नंबर आदि लिखते हुए समय समय पर इनका उपयोग करें | सभी संकुलों में ऐसे स्त्रोत व्यक्तियों की सूची अनिवार्यतः उपलब्ध होनी च्चाहिए | इसे Resource Mapping booklet कहा जाए और इसे नियमित रूप से अद्यतन किया जाए | सभी संकुल समन्वयक अपने अपने स्त्रोत केंद्र में यह पुस्तिका रखें |

एजेंडा # 8: फिनलैंड में शिक्षा से परिचय एवं हमारी शालाओं में लागू किए जाने योग्य क्षेत्र –

दिनांक 23.12.2016 को राज्य में SCERT द्वारा फ़िनलैंड की शिक्षा पद्धति का हमारे कक्षाओं में उपयोगिता पर आधारित कार्यशाला में पहली बार जिलों में गठित PLCs को शामिल होने का मौका मिला ताकि वे अपने–अपने क्षेत्रों में बेहतर कक्षागत प्रक्रियाओं को **पूरे** जोश एवं रचनात्मकता के साथ लागू कर सकें | रायपुर में आयोजित इस कार्यशाला में कुल पांच सौ से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे जिसमे से लगभग दो सौ लोग विभिन्न जिलों के पीएलसी के सक्रिय सदस्य थे जिन्हें व्हात्सेप्प में उनकी अकादमिक क्षेत्रों में सक्रियता के आधार पर आमंत्रित किया गया था | इस कार्यशाला से कुछ ऐसी चीजें जिन्हें हम अपनी कक्षाओं में लागू कर सकते हैं, किये जाने योग्य हैं, वे हैं –

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा में विशेष ध्यान दिया जाता हैं | हमें भी अपने शाला में आने वाले बच्चों को उनके आगनबाडीयों आंगनबाड़ियो में पढाई के स्तर में सुधर हेतु आवश्यक सहयोग /समन्वय करना चाहिए ताकि कक्षा एक में प्रवेश लेने वाले बच्चों का स्तर बेहतर हो |
- बच्चों को बहुत आदर दिया जाता हैं और उन्हें सीखने में हर–संभव सहायता दी जाती हैं | हमें भी अपने बच्चों के अंदर यह विश्वास पैदा करना होगा की वे सीख सकते हैं और बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं | हमें बच्चों पर विश्वास करना होगा | उनमे आत्मविश्वास पैदा कर सीखने के लिए तैयार करना होगा |
- प्रत्येक कालखंड में सीखने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है और उस निर्धारित लक्ष्य को समय पर सभी बच्चों के साथ पूरा करने का प्रयास किया जाता है | हमें भी प्रतिदिन प्रत्येक कालखंड में बच्चों को क्या–क्या आ जाना चाहिए, इसका निर्धारण करते हुए सोच–समझकर कार्य करना होगा |
- परीक्षाओं में स्मृति या रटने पर आधारित प्रश्न न पूछते हुए ऐसे प्रश्न पूछने की व्यवस्था की जानी चाहिए जो बच्चों के रचनात्मक कौशलों के विकास के लिए सहायक हों | इससे हमारे बच्चों के भीतर छिपे क्रिएटिव आइडियाज का पता चल सकेगा | संकुल में बैठक कर शिक्षकों को ऐसे प्रश्न तैयार करने हेतु प्रेरित करें |
- शिक्षकों को अध्यापन कार्य के लिए बहुत अधिक मेहनत एवं तैयारी करनी पड़ती है | शिक्षक प्रशिक्षण भी बहुत कठिन होता है | हमारे यहाँ भी शिक्षकों को अपने अध्यापन कौशल में निखार लाने मेहनत एवं अध्ययन करते रहना चाहिए |
- प्रत्येक पाठ के लिए शिक्षण योजना बनाई जाती है | किसी पाठ को अगले वर्ष दुबारा पढ़ाते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसमे नवीनता लाई जाए | नए विद्यार्थियों को पढ़ाते समय भी शिक्षक पिछली कक्षा के अनुभव के आधार पर अपनी शिक्षण योजना में आवश्यक संशोधन करते रहते हैं |
- प्रत्येक शिक्षक को अपने कार्यक्षेत्र के अनुभवों के आधार पर कुछ लघुशोध करने होते हैं | इसके लिए अलग से उनका कोई प्रशिक्षण नहीं होता | क्या हमारे शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों की छोटी–छोटी केस स्टडी नहीं लिख सकते ? ऐसे अध्ययन के लिए विभिन्न मुद्दें सोचकर हमारे साथ शेयर करें |

एजेंडा # 9: मैनेजमेंट की कुछ बातें–

S C E R T द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में मैनेजमेंट पर हुए व्याख्यान से भी हमारे पीएलसी के शिक्षक बहुत प्रभावित हुए | कुछ ने तो उनके व्याख्यान के कुछ अंशों के आडियो भी व्हात्सेप्प के माध्यम से शेयर किए | इनमे से कुछ हैं –

शिक्षकों को अपने कार्य के महत्व से परिचित होना होगा | वो जो कार्य कर रहे हैं, वो कितना महत्वपूर्ण है और उनका सकारात्मक दृष्टिकोण इस कार्य में कितना प्रभाव डाल सकता है, इसका जीता–जागता उदाहरण इस वास्तविक घटना के माध्यम से समझा जा सकता है –

- तमिलनाडु के मैलापुर इलाके में एक मां अपने बेटे के साथ भीख मांग कर गुजारा करती थी | एक शिक्षिका उमा की नजर उस बच्चे पर पड़ी और उसने उसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया | जेवियर नामक यह बालक उस महिला के बातों से प्रभावित होकर अपने दम पर पढ़ना शुरू किया | स्कोलरशिप लेकर जर्मनी में उसने इन्जिनियरिंग की पढाई की और आज वह यांत्रिक ऊर्जा से कार चलाने का माडल बना चुका है | नौकरी मिलने पर उसने भारत वापस आकर अपनी मां के लिए एक घर बनाने का संकल्प लिया है |
- इसी प्रकार मेरी नामक एक शिक्षिका ने अपने एक विद्यार्थी जिसकी माता के देहांत के बाद वह पढाई से विमुख हो चुका था को थोड़ा सा सम्मान और प्यार दिया तो वह पुनः पढाई में रूचि लेते हुए आज अमेरिका में एक बड़ी कंपनी में इंजिनियर के पद पर कार्य कर रहा है | उसने अपनी उस शिक्षिका को जिसकी वजह से उसका जीवन बदल गया, अपनी शादी में कैलिफोर्निया बुलाकर अपनी मां की जगह में उसे बिठाया और पूरा आदर दिया |
- श्री रघुरामनजी ने अभी तक बहुत सी पुस्तकें लिखी और रोज वे मैनेजमेंट का फंडा नियमित रूप से लिखते हैं | अपने पिता के देहावसान के दिन भी उन्होंने उस दिन के अनुभव को साझा किया | पिछले पंदह वर्षों से वे लिख रहे हैं | उनकी सबसे प्रिय पुस्तक “जिन्दगी की पाठशाला” है जो उन्होंने अपने एक शिक्षक के बारे में लिखी है | क्या आपका कोई विद्यार्थी भी आपसे प्रभावित होकर आपके ऊपर कोई पुस्तक लिख सकता है ? ऐसा हो सकता है ! इन बच्चों का कोई भरोसा नहीं !
- बच्चे हमेशा शिक्षक के व्यवहार को अपनाते हैं उसके निर्देश को नहीं | इसलिए आपको अपना व्यवहार संयमित रखना चाहिए और बच्चों से बेहतर संबंध बनाए रखना चाहिए | आपके उपदेश से नहीं वरन आपके आचरण से आप समाज को बदलने की क्षमता रख सकते हैं |
- हमारे पास तीन प्रकार में दिमाग वाले लोग मौजूद होते हैं | एक कमजोर दिमाग वाले लोग– जो गपशप में अपना समय बिता देते हैं, दूसरा औसत दिमाग वाले लोग– जो किसी घटनाक्रम के बारे में बात करते रहते हैं, तीसरे लोग वो होते हैं जो ब्राईट माइंड अर्थात आइडिया पर बात आकर उन्हें लागू करने की दिशा में कार्य करते हैं | आप किस श्रेणी में आना पसंद करेंगे ?

एजेंडा # 10: चित्र पर चर्चा–

चर्चा के बिंदु–

खेल–खेल में इस आदिमानव के बच्चे ने चक्के का निर्माण कर लिया पर उसके इस खोज को मात्र खेल मानते हुए उसे अपने भाई के मेहनत वाले काम में सहयोग के लिए कहा जा रहा है | चक्के का इस्तेमाल कर वह अपने भाई व्दारा किए जा रहे काम को बहुत आसान कर सकता है |
हमारे आसपास, कक्षाओं में भी बच्चों के पास बहुत से आइडियाज होते हैं | जरूरत है कि हम उनके कल्पनाशील विचारों एवं आइडियाज को सुनें |
क्या आप अपने विद्यार्थियों को ऐसे अवसर कक्षाओं में देते हैं ? क्या हम इस चित्र के अनुसार ऐसे कार्यों को हतोस्ताहित करते हैं ?
क्या ऐसे आइडियाज को प्रोत्साहित कर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम इग्नाईट अवार्ड के लिए आप भेजने को तैयार हैं ?

जाते जाते....

वर्ष 2016 हमसे विदा ले चुका है और हम 2017 में पहुँच चुके हैं | चर्चा पत्रों के माध्यम से हम इस कोशिश में लगे हैं कि हमारे शिक्षकों का सतत क्षमता विकास हो और साथ ही वे अपनी एक प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर एक दूसरे से सीखने की प्रक्रिया मिलकर जारी रखें | हम सभी को नवीन जानकारियों से अपडेट रहना चाहिए वरना हम सब अपने अपने स्कूल में कड़ी मेहनत तो कर रहे होते हैं पर दुनिया में क्या हो रहा है, क्या कुछ नया हो रहा हो, इसकी जानकारी नहीं हो पाती | लोग आपके व्दारा किए जा रहे बेहतर कार्यों को भी नहीं जान पाते | इन सब कमियों को दूर करने का बेहतर विकल्प चर्चा पत्र के रूप में सामने आ रहा है | Inter-state Council की बैठक में शिक्षकों को टेक्नोलोजी के उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करने के सुझाव दिए गए हैं | इस दिशा में प्रयास करते हुए अब आपको चर्चा पत्र नियमित रूप से हमारे वेबसाईट http://www.ssachhattisgarh.gov.in/pedagogy.php में एवं alokshukla.com में भी उपलब्ध कराया जा रहा है | आपसे अनुरोध है कि आप alokshukla.com में अपने आपको पंजीकृत कर लेवें | इसमें शिक्षा से संबंधित बहुत सी बातें आप भी शेयर कर सकते हैं | चर्चा पत्र तो हम सब शिक्षकों के लिए है | अब हम बच्चों के लिए भी एक ई–मैगजीन – "किलोल" आपके लिए लेकर आ चुके हैं | इसे आप http://alokshukla.com/ChildrenMagazine/DownloadKilol.aspx में जाकर डाउनलोड कर सकते हैं | अभी तक लगभग सौ लोगों ने इसे डाउनलोड कर लिया है | आप इसके लिए अपने लेख भी इसमें दिए पते पर या हमारे ग्रुप के व्हात्सेप्प पर भेज सकते हैं | चर्चा पत्र के लिए भी रोचक जानकारियाँ भेजते रहें | पूरा विश्वास है कि इस वर्ष हम अपनी कक्षाओं में बच्चों के विकास के लिए बहुत कुछ कर सकेंगे | आप सभी से इन कार्यों के लिए नियमित सहयोग मिलता रहेगा ! इन्ही आशाओं के साथ पुनः सभी को नव वर्ष की बधाइयां !!